कपास नई खोज़

भा.कृ.अनु.प. - केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान द्वारा प्रकाशित साप्ताहिक संवाद-पत्र

देखें: www.cicr.org.in

अंक: 2 खंड: 7 जुलाई 6–12, 2014

सार्वजनिक भाषण

डॉ.के.आर.क्रांति, निदेशक, के.क.अ.सं ने भारतीय मृदा विज्ञान समाज और भूमि उपयोग की योजना द्वारा एन.बी.एस.एस.एव.लुप, अमरावति रोड, नागपुर में 11 जुलाई 2014 को आयोजित "गिरते भूमि संसाधनों के साथ लाखों को खिलाना" के संबंध में एक व्याख्यान दिया । उनकी भाषण में, उन्होंने भारत में जनसंख्या वर्ष 2020 में 1.5 बिल्लियन तक पहुंचने की उम्मीद होते हुए भी, 155 मीटर हेक्टेयर की भारत की कृषि योग्य भूमि सीमित है और अपने लोगों को खिलाने के लिए तीव्र रुप में खेती की जानी चाहिए इस पर प्रकाश डाला । भारतीय कृषि वैज्ञानिकों, खाद्यान्न उत्पादन में सकारात्मक वृद्धि की प्रवृत्ति रखने के लिए मुश्किलों से जूझ में सफल रहे हैं । पिछले एक दशक में कृषि वैज्ञानिक के काफी प्रयास के कारण अनाज दाल, दूध, अंडे, सब्जियों और फलों की हाल ही में लगातार कीर्तिमान उत्पादन ज्यादा हैं । हालांकि, वैश्विक प्रवृत्तियों की तुलना में, देश से भिड़ने चिंताओं में से चावल, गेहूं, कपास मक्का और ज्वार की कम उत्पादकता का स्तर एक है । इसके अलावा, पिछले 10 वर्षों में चारा दाल, सूरजमुखी और मूंगफली के 40 लाख हेक्टेयर क्षेत्र को कपास में हाल ही में रूपांतरण किए गये जिसके परिणामस्वरूप चारा, सूरजमुखी और मूंगफली की पैदावार में प्रगतिशील गिरावट हुआ है जिससे संभवतः सब्जी की अचानक सात (7) गुना के तेल आयात वृद्धि जो 60 हजार करोड़ रुपए की सीमा तक होता है । इस मुद्दे चिंता की बात है और प्राथमिकता के आधार पर हल किया जाना चाहिए । भारत की बढ़ती हुई जनसंख्या को खिलाने के लिए उसको खाद्य फसल विकास के प्रवृत्ति के साथ तालमेल रखना होगा । कृषि उत्पादकता के चुनौतियाँ, जलवायु में प्रतिकूल परिवर्तन, बिगड़ती मृदा स्वास्थ्य, भूजल के प्रगतिशील कमी, शहरी क्षेत्रों में कृषि मजदूरों के प्रवास उर्वरक आयात पर अत्यधिक निर्भरता के साथ बढ़ रही हैं । भारतीय कृषि वैज्ञानिकों हेतु यह एक बड़ी चुनौती है कि उन्हें पर्यावरण की संगत प्रौद्योगिकियों को खोजना है ताकि संयुक्त राज्य अमेरिका, ब्राजील और चीन जैसे देशों के साथ उत्पादकता बराबर बढ़ाया जा सकता है, विश्व स्तर पर कृषि निर्यात में प्रतिस्पर्धी बनने में सफल होना एवं भारत की बढ़ती जनसंख्या को खिलाना संभव होंगे ।

वैज्ञानिक साहित्य का स्कैन

नैनो उर्वरकों के माध्यम से जीवन भर स्थिरता

हरित क्रांति कृषि में उर्वरकों के उपयोग में वृद्धि हुई है और इसके कारण मिट्टी और पानी गिरावट भी हुई । बढ़ती जनसंख्या और जलवायु परिवर्तन प्राकृतिक संसाधनों की कमी के कारण होते हैं और कृषि उत्पादकता के लिए सीमित कारक हैं । नैनो और कृषि के अभिसरण कृषि स्थिरता के कारण बन सकता है एवं अल्प मात्रा अपयोग में ही वनस्पतियों और जीव की सभी जरूरतों को पूरी कर सकते हैं । फसल उत्पादन में नैनो उर्वरकों के प्रयोग के माध्यम से पर्यावरण प्रणाली में अतिरिक्त निषेचन के सभी प्रतिकूल प्रभाव निरस्त किया जाएगा । नैनो उर्वरकों के बारे में सबसे मूल्यवान जानकारी प्राकृतिक संसाधनों से प्राप्त होता है । कण आकार और आकार परमाणुओं के एकत्रीकरण के माध्यम से विकसित किए गए ।

नैनो उर्वरक के धीमी और स्थिर पोषक जारी क्षमता के कारण पोषक तत्व उपयोग दक्षता में सुधार होता है । यह कणों के सूक्ष्म और मेसो- सरंध्रता की भूमिका के लिए जिम्मेदार ठहराया जा सकता है । कण सतह संशोधन या तो फैटात्मक या ऋणात्मक हो, धीमी पोषक जारी में मदद करता है । नैनो उर्वरक फसल पोषण के साथ मिलकर काम करता है । सभी जीवन लंबी स्थिरता, हमें उसको अपनाने में और भारतीय कृषि में नैनो उर्वरक उपयोग पर निर्भर करता है ।

संदर्भ:

कोमारनेनी, एस. (2009). पर्यावरणीय मृदा विज्ञान में नैनो के शक्यता. 9 वीं अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन पूर्व और दक्षिण पूर्व एशिया फेडरेशन के मृदा विज्ञान समाज (मृदा विज्ञान और उर्वरकों की कोरियाई समाज, सियोल) के प्राक, पी.पी. 16-18.

मणिकंडन,ए. एवं के.एस,सुब्रमणियन (2014). निर्माण और नैनोपोरस जिओलाइट आधारित नाइट्रोजन उर्वरक का लक्षण, वर्णन । कृषि अनुसंधान 9 के अफ्रीकी जर्नल (2): 276-284.

डॉ. ए. मणिकंडन, वैज्ञानिक, मृदा विज्ञान और ए.सी, के.क.अ.सं, नागपुर द्वारा योगदान ।

निर्मित एवं प्रकाशित: डॉ. के.आर.क्रांति, निदेशक, के.क.अ.सं, नागपुर
प्रमुख संपादक: डॉ. नंदिनी गोक्टे-नार्खडेकर
संपादकों: डॉ. जे.एन्नि शीबा, डॉ. विश्लेष नगरारे, डॉ. जे.अमुदा एवं डॉ. एम.शरवणन
जनसंचार माध्यम समर्थन एवं रुपांकन: डॉ. एम.सबेष एवं श्री. एस.सत्यकुमार
हिन्दी अनुवाद: श्रीमति. के.सुभश्री एवं डॉ. अ.हि.प्रकाश
निर्मित समर्थन: श्री. संजय कुश्वाहा

प्रमाण: कपास नई खोज अंक-2, खंड-7, 2014, भा.कृ.अनु.प. - केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर

प्रकाशन टिप्पणी: यह समाचार पत्र आनलाईन http://www.cicr.org.in/News Letter.html में उपलब्ध है।
कपास नई खोज एक खुला उपयोग कपास समाचार पत्र है ।

कपास नई खोज - के.क.अ.सं, समाचार पत्र केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर द्वारा प्रकाशित साप्ताहिक संवाद-पत्र.
कार्यालय: पांजरी, एल.पी.जी. बॉटलिंग प्लॉन्ट के पास, वर्धा रोड, नागपुर- 441 108.
दूरभाष: 07103-275536 फैक्स: 07103-275529; E-mail: cicrnagpur@gmail.com